

Volume-7 (2016)

ISSN : 2231-3893

HISTORY

PAST AND PRESENT



Piyush Kamal Sinha
Chief Editor

Mukesh Kumar
Executive Editor

UNIVERSITY DEPARTMENT OF HISTORY
MAGADH UNIVERSITY, BODH-GAYA

17. Origin of Caste as one's Identity with Special Reference to Bihar
Pankaj Kumar Jha 139-146
18. Railways and Flood: A Questioned Relationship In Colonial Bihar (1920-1940)
Kriti Singh Anand 147-154
19. Agrarian Issues, Kisan Sabha and Congress : A Study of Peasant Movement in Bihar During Inter- War Period
Rajkishor 155-168
20. Jagat Narain Lal and The National Movement
Manish Sinha 169-176
21. The Kabirpantha Among the Oraons : Ideology and Activities
Piyush Kamal Sinha 177-182
22. Socio-Cultural and Spiritual Dimensions of Ecology Conservation in Tribes of Chhattisgarh
Anil Kumar Pandey 183-196
23. Gandhism in the Age of Terror
Suryakant Nath 197-204
24. Reason and Dissent: The Historical and Philosophical Foundation of Democracy in India
Sudhanshu Kumar Jha 205-2014
25. Debates on OBCs in Bihar : Inclusive Policies -Myth & Realities
Sudhir Kumar Singh 215-224
26. Raffle's Commercial Adventures to Japan
Prof. B.N. Singh and Rambha Singh 225-230
27. Culture and identity : A Study of The Indians in St. Lucia
Mukesh Kumar 231-238
28. सांस्कृतिक इतिहासलेखन की अद्यतन अवधारणा : समस्या और संभावनाएँ
अविनाश कुमार झा 239-244
29. किसान आन्दोलन की ऐतिहासिक पंक्ति : राहुल के सर से खून गिरे
ब्रजेश कुमार श्रीवास्तव 245-252
30. धर्म और वैश्विक शान्ति मानव-जीवन के सहगामी मूल्य
रविकान्त प्रसाद एवं वंशोधर प्रसाद रूखैया 253-260

किसान आन्दोलन की ऐतिहासिक पंक्ति : राहुल के सर से खून गिरे

ब्रजेश कुमार श्रीवास्तव*

राजेन्द्र कालेज छपरा के प्रिंसिपल प्रोफेसर मनोरंजन द्वारा सृजित कविता- 'राहुल का खून पुकार रहा' की प्रथम एवं महत्वपूर्ण पंक्ति- 'राहुल के सर से खून गिरे' है। किसान आन्दोलन की इस ऐतिहासिक पंक्ति का सृजन उन्होंने 1939 में किया था। इस कविता की विषय वस्तु उन्हें 1939 के अमवारी किसान सत्याग्रह से मिली। इस किसान आन्दोलन का नेतृत्व राहुल सांकृत्यायन ने किया था। वे जमीन से जुड़े किसान नेता थे। इस सत्याग्रह के दौरान उन पर लाठी से हमला हुआ। इनका सिर फूट गया और उससे खून गिरने लगा। यह खून बेकार नहीं गया और रंग लाया। प्रो. मनोरंजन ने इस पर जो कविता लिखी उसने किसान आन्दोलन को एक नया जोश दिया। जनता आन्दोलित हो उठी। इस घटना पर प्रकाश डालते हुए राहुलजी की विदुषी पत्नी कमला सांकृत्यायन ने लिखा कि - "भारतीय किसान आन्दोलन के इतिहास में 24 फरवरी 1939 ई. की घटना अमिट रूप से अंकित हुई है, और यह ऐतिहासिक पंक्ति - 'राहुल के सिर से खून गिरे' इसका प्रमाण है।"

जिस प्रकार सुभद्रा कुमारी चौहान की कविता 'बुन्देले हरबोलों के मुँह हमने सुनी कहानी थी, खूब लड़ी मर्दानी वह तो आँसी वाली रानी थी' ने न केवल बुन्देलखण्ड अपितु समस्त भारत का आन्दोलित किया, उसी प्रकार प्रो. मनोरंजन की उक्त कविता ने बिहार को आन्दोलित कर दिया। इस कविता की कुछ महत्वपूर्ण पंक्तियाँ निम्नानुसार हैं -

राहुल के सिर से खून गिरे
फिर क्यों यह खून उबल न उठे?
साधू के शोणित से फिर क्यों
सोने की लंका जल न उठे?
राहुल का खून पुकार रहा,
बढ़ने को हमें प्रचार रहा
वह विश्व विदित विद्वान आज
हँसिया लेकर ललकार रहा।

इस कविता की एक-एक पंक्ति हृदयस्पर्शी है। इस कविता में न केवल राहुलजी की किसान आन्दोलन में भूमिका अपितु कृषक समस्याओं को लेकर उनकी चिन्ताएँ भी स्पष्टतः

* प्रोफेसर, इतिहास विभाग, डॉ. हरीशंहर गौर केन्द्रीय विश्वविद्यालय, सागर (म.प्र.)